BA राजनीतिक सिद्धांत

1st year

Political Theory (Major Subject)

अब होगी BA के साथ UPSC व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओ की तैयारी

BA के नियमित एवं प्राइवेट छात्रो हेतु उपयोगी कक्षाए

LODHAJI CLASSES

Class - 08

Based on New Education Policy

राज्य की उत्पत्ति का

सावयव सिद्धांत

Evolutionary Theory of State

By Lodhaji sir

Free Compelet BA on Youtube With Notes

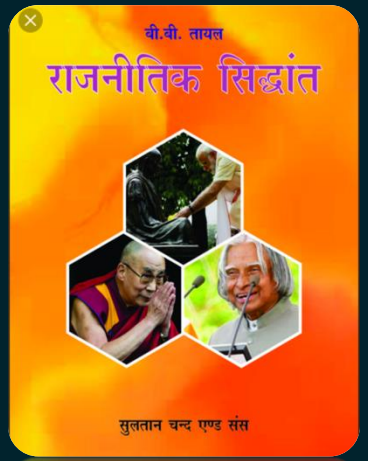

बी.बी. तायल
राजनीतिक सिद्धांत
सुलतान चन्द एण्ड संस

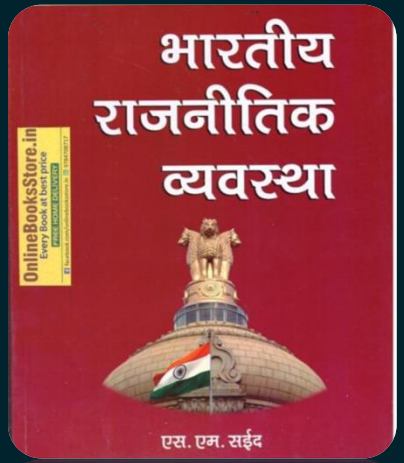

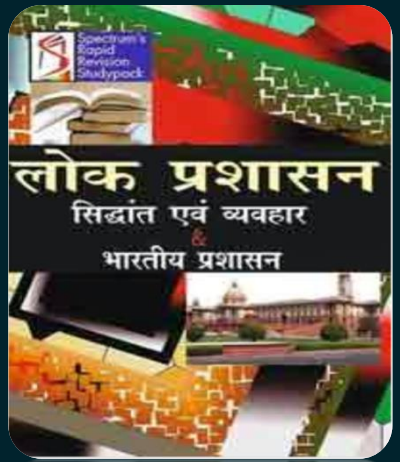

भारतीय
राजनीतिक
व्यवस्था
OnlineBooksStore.in
Every Book at best price
एस. एम. सईद

Spectrum's
Rapid
Revision
Studypack
लोक प्रशासन
सिद्धांत एवं व्यवहार
&
भारतीय प्रशासन

भारतीय राष्ट्रीय
आंदोलन

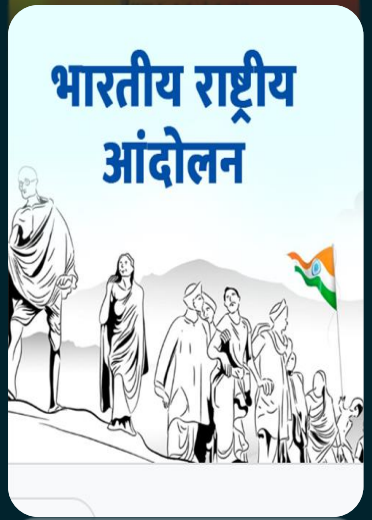

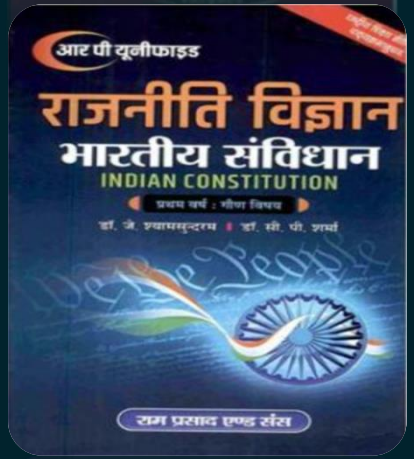

आर पी यूनीफाइड
राजनीति विज्ञान
भारतीय संविधान
INDIAN CONSTITUTION
राम प्रसाद एण्ड संस

प्रतियोगी परीक्षाओ की तैयारी करने के लिए नए YouTube चैनल “प्रज्ञान हिंदी” को Join करे

UPSC, PSC, Railway, SI, Banking, SSC, POLICE

Unit - 2 (राज्य की अवधारणा)

1. राज्य को परिभाषित करना, राज्य के तत्व !
2. राज्य की उत्पत्ति के सिद्धांत।
3. राज्य की प्रकृति का बदलता स्वरुप।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

BA On Youtube

1. सावयव सिद्धांत का अर्थ

2. सावयव सिद्धांत का विकास

3. सावयव सिद्धांत का महत्व

4. आलोचनाएं / कमिया

राज्य की उत्पत्ति का सावयव सिद्धांत / Organic Theoty of State

- सावयव सिद्धांत एक ***जीव वैज्ञानिक धारणा*** है जो राज्य को एक शरीरधारी ***व्यक्ति*** मानती है।
- उसका निर्माण करने वाले व्यक्तियों को जीव - कोष के समान समझती है और राज्य तथा व्यक्तियों के बीच ठीक उसी प्रकार पारस्परिक निर्भरता के संबंधों की कल्पना करती है, जैसे शरीर और उसके अंगों के बीच होता है - **गार्नर**

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

राज्य की उत्पत्ति का सावयव सिद्धांत / Organic Theoty of State

1. सावयव सिद्धांत का अर्थ

- सावयव सिद्धांत को आंगिक सिद्धांत या शरीर सिद्धांत भी कहा जाता है।
- इस सिद्धांत के अनुसार राज्य एक शरीर अथवा व्यक्ति के समान है। जैसे मानव का शरीर विभिन्न अंगों से मिलकर बनता है , वैसे ही राज्य भी विभिन्न अंगों के सम्मिश्रण से बना है।
- जैसे मानव शरीर के अंगों के अलग – अलग कार्य होते हैं , और शरीर असंख्य जीव-कोषों (Cells) का परिणाम है। वैसे ही असंख्य मानव राज्य के जीव कोष है।
- जैसे मानव शरीर से कोई अंग कट जाने पर वह निरर्थक हो जाता है, वैसे ही राज्य में मनुष्य का अपना कोई पृथक अस्तित्व नहीं बल्कि वह अन्योन्याश्रित है।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

राज्य की उत्पत्ति का सावयव सिद्धांत / Organic Theoty of State

2. सावयव सिद्धांत का विकास

- सावयव सिद्धांत उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी राजनीतिक विचारधारा।

- **प्लेटो** - राज्य व्यक्ति का वृहद रूप है। वह व्यक्ति की तुलना छोटी इकाई से और राज्य की तुलना बड़ी इकाई से करते हैं। उनके अनुसार जिस प्रकार मनुष्य में साहस, विवेक और वासना 3 गुण पाए जाते हैं, वैसे ही राज्य में योद्धा, शासक और उत्पादक तीन प्रकार के मनुष्य पाए जाते हैं।

- **अरस्तु** - व्यक्ति राज्य का एक अन्तर्हित भाग है। वह व्यक्ति और राज्य की तुलना अंग और शरीर के रूप में करते हैं।
  - रोम के दार्शनिक सिसरो ने भी इस सिद्धांत का समर्थन किया है। वे कहते हैं कि जैसे आत्मा मानव शरीर पर शासन करती है, वैसे ही राजा को राज्य रूपी शरीर पर शासन करना चाहिए। उन्होंने मानव को राज्य का ही एक स्वाभाविक और अभिन्न अंग बताया है।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

राज्य की उत्पत्ति का सावयव सिद्धांत / Organic Theoty of State

3. सावयव सिद्धांत का महत्व

1) राज्य **कृत्रिम वस्तु नहीं** है, अपितु इसका **विकास** हुआ है।
2) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और यह सामाजिक प्रवृत्ति ही राज्य को जन्म देती है।
3) यह राज्य और नागरिकों की पारस्परिक निर्भरता पर बल देता है।
4) यह सामाजिक जीवन की मौलिक एकता पर जोर देता है।
5) यह सिद्धांत इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि समाज केवल बिखरे हुए व्यक्तियों का समूह मात्र नहीं है, समाज के सभी व्यक्ति एक दूसरे से संबंधित है और सब मिलकर समाज पर निर्भर करते हैं।

➢ **इस सिद्धांत का महत्व इस बात में निहित है कि सबके कल्याण में ही व्यक्ति का कल्याण निहित है।**

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

4. आलोचनाएं / कमिया

1) <u>समानता पूर्ण नही है</u>

- शरीर तथा राज्य में कोई समानता नहीं है। जिन तत्वों से शरीर बनता है उनकी तुलना व्यक्ति से नहीं की जा सकती है।
- शारीरिक घटकों का कोई पृथक व्यक्तित्व, इच्छा व चेतना नहीं होती। वे पदार्थ के अंग मात्र होते हैं। किंतु व्यक्ति का एक पृथक अस्तित्व, इच्छा व चेतना शक्ति होती है।
- यह सत्य है कि समाज तथा राज्य के बिना व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं कर सकता , परंतु वह उसके बिना जीवित अवश्य ही रह सकता है।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

2) व्यक्ति का स्थान पूर्व निर्धारित नहीं होता

- शरीर के अंतर्गत विभिन्न अंगों का स्थान पूर्व निर्धारित होता है, किंतु व्यक्ति समाज में अपने स्थान और भाग्य का स्वयं ही निर्माता होता है तथा समाज में उसका स्थान पूर्व निर्धारित नहीं होता।

3) जन्म, विकास तथा मृत्यु के नियम भिन्न

- शरीर दो प्राणियों के संसर्ग से जन्म लेता है। राज्य के साथ ऐसा नहीं है। एक जीवित शरीर भीतर से बढ़ता है और उसकी वृद्धि व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर नहीं करती है।
- किंतु राज्य बदलता रहता है और उसकी उन्नति में उसके सदस्यों के प्रयत्नों एवं इच्छाओं का बहुत योग होता है।
- अंत में प्राणी शरीर विकासशील होता है और वृद्ध होकर मृत्यु को प्राप्त होता है, किंतु इसके विपरीत राज्य स्थाई होता है।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

राज्य की उत्पत्ति का सावयव सिद्धांत / Organic Theoty of State

4) राज्य के कार्य क्षेत्र की उचित व्याख्या नही

- सावयव सिद्धांत की व्याख्या राज्य के कार्य क्षेत्र को लेकर की गई है।
- परंतु राज्य के कार्य क्षेत्र के संबंध में सिद्धांत के समर्थकों में मतभेद है।
- ***स्पेंसर*** इस सिद्धांत के माध्यम से हस्तक्षेप की नीति या व्यक्तिवाद का समर्थन करता है।
- ***जर्मनी के उग्र आदर्शवादी*** इस सिद्धांत के द्वारा राज्य को श्रेष्ठ व्यक्ति मानते हुए उसे (राज्य को) असीमित कार्य सौप देने के पक्ष में है।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

Next Session will be on...

राज्य की उत्पत्ति का दैवीय सिद्धांत

Divin theory of Origin of State

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

THANK YOU

New way of Learning….
https://t.me/lodhajiclasses

Telegram

सभी क्लास नोट्स के
pdf download
करने हेतु join करे
Link
LODHAJI CLASSES

प्रज्ञान
हिंदी